IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

गॉधी के आईने में वर्तमान सामाजिक–राजनैतिक परिदृष्य

डॉ संदेश त्यागी

प्रस्तावना–

अस्मिन् सती इदम् भवति– अर्थात् यह है, वह होता है। बुद्ध का यही सिद्धान्त है– परिवर्तन का। परिवर्तन ही शाश्वत है। मनुष्य हो या परिस्थितियाँ, हर पल बदल रहे हैं। इस बदलाव की धारा में दशाएँ भी बदल रही हैं और दिशायें भी। इतिहास में हुए विश्व युद्धों ने हमें बतला दिया है कि हम इस मुग़ालते में न रहें कि हम शाश्वत हैं। सदियों से विकसित हुई ये सभ्यताएँ व संस्कृतियाँ जहाँ एक ओर एक बटन के दबने मात्र से पल भर में ध्वस्त हो सकती हैं, वहीं दूसरी ओर बटन दबाने की जरूरत भी नहीं है क्योंकि सामाजिक ताना–बाना इतना संकुचित होता जा रहा है कि एक खतरा यह भी उत्पन्न हो गया है कि हमें स्वयं को नष्ट करने के लिये कोई विश्वयुद्ध करने की आवश्यकता ही नहीं है। इतनी घृणा पैदा हो रही है कि हम आपस में ही लड़ मरेंगे, अतिशीघ्र। इतना होने के बावजूद भी हम जिस दिशा में बढ़ रहे हैं, उस दिशा के खतरों से वही व्यक्ति हमें सावधान कर सकता है जो दुनियावी परम्पराओं, मनोविज्ञान, सभी स्थितियों और परिस्थितियों की समझ तो रखता हो लेकिन हर प्रकार क बन्धन से दूर हो, जिसका हृदय भावों, वेदना व संवेदना से भरा हो, जो संस्कृति और सभ्यता से अधिक विश्वास मानवता में करता हो। जो मानता हो कि एक भी व्यक्ति पीछे छूटा तो सभी

के आगे जाने का सपना टूटा। ऐसा व्यक्ति जो चाहता हो कि मानवता बची रहे, जिसे न प्रशंसा की परवाह हो न निंदा की चिंता। जो अपने मन वचन और आचरण से हमें सोचने के लिये बाध्य कर दे कि हम अपनी दशा और दिशा पर विचार अवश्य करें।

मानव जाति के इतिहास पर दृष्टिपात करें तो ऐसा मार्गदर्शक गाँधी के अलावा कोई नज़र नहीं आता। गाँधी ही एक मात्र व्यक्ति है जो राजनीति और धर्म का, नैतिकता का और आध्यात्मिकता का, संत और राजनेता का, शक्ति और शान्ति का सन्तुलन बना सके। यही कारण है कि अपनी दैहिक अनुपस्थिति के बावजूद अनक दशकों से गाँधी, प्रकाश पुंज बनकर समस्याओं के अंधकार से निजात दिलाने की उम्मीद जगाये हुए हैं।

देश के आजाद होने के बाद आचार्य विनोबा भावे ने कहा था—अँग्रेज भले ही सात समन्दर पार चले गये हों लेकिन हमारी लड़ाई अभी समाप्त नहीं हुई है। हमें अभी लड़ना है, जाति और मज़हब के बन्धनों से, हमें लड़ना है गरीबी और बेरोजगारी से, लडाई बाकी है साम्प्रदायिकता की ओछी मानसिकता से।सही कहा था विनोबा ने, लड़ाई खत्म नहीं हुई है अभी,लेकिन लड़ाई के लिये फिर गाँधी की आवश्यकता है। इसलिये कि उन्हीं के मागदर्शन में और उन्हीं के रास्ते पर चलकर ये लड़ाई जीती जा सकती है। आवश्यक नहीं कि मार्गदर्शन के लिये दैहिक रूप से उपस्थित ही हुआ जाये गाँधी, भारतीय जनमानस के रोम—रोम में बसे है, बस आवश्यकता है उन्हें महसूस करने की। जिस पल हमने भीतर के गाँधी से सवाल पूछ लिया उसी पल हमें समस्याओं से निजात पाने का वो रास्ता उपलब्ध हो जायेगा जो शान्ति और सुकून की मंज़िल तक जाता है। एक बार गाँधी से किसी ने कहा कि बापू! आपके अनुयायियों में कुछ बेबसी है। वे

हर बात आपसे पूछते हैं। आपके बाद इनका क्या होगा। बापू ने कहा कि हाँ, वे बात बात पर मुझसे पूछते हैं। उम्मीद है कि मेरे बाद उनमें वो शक्ति व तेजी अपने आप आ जायेगी। अगर मेरे सन्देश में कुछ है तो मेरे जाने के बाद वह मर नहीं जायेगा ।ष

गलत थे गाँधी जिन्हें लगता था कि वे मर जायेंगे गाँधी जन्में ही नहीं तो वो मरे भी नहीं। वो मर ही नहीं सकते, क्योंकि विचार मरते ही कहाँ हैं, वो बस फैलते हैं खुशबू की तरह। विचार फैलते हैं, सरहदों को लाँघकर–सभी तरह की सरहदों को– चाहे वे भाषा की हों, महज़ब की हों या देशों की। विचार नश्वर नहीं होता, विचार शाश्वत होता है। गाँधी शाश्वत हैं क्योंकि गाँधी सत्य हैं, गाँधी शाश्वत हैं क्योंकि गाँधी प्रेम हैं, गाँधी शाश्वत हैं क्योंकि गाँधी मानव कल्याण हैं, गाँधी शाश्वत हैं क्योंकि गाँधी, गाँधी हैं। हम खुश हो सकते हैं, ये सोचकर कि गाँधी, जिसकी खुशबू पूरी कायनात में बिखर गई, वो हमारे बाग का फूल है, वे तो फैलते हैं एक खुशबू की मानिन्द जो जहाँ से गुजरे, माहौल को सुवासित कर जाती है और रूह को पुरसुकूँ । लेकिन गाँधी हमारे या तुम्हारे या उनके नहीं हो सकते, गाँधी सबके ही हो सकते हैं। गाँधी असीमित ही हो सकते हैं। सीमाओं से पार जाना ही तो गाँधी होना है।

दरअसल गाँधी से सवाल पूछना अपने आप से पूछना है, अपनी अन्तरात्मा से पूछना है। गाँधी से पूछना मोहनदास कर्मचंद गाँधी से पूछना नहीं है, वो उस यात्री से पहना है जिसने मोहन से महात्मा तक का सफ़र पूरा किया है। इसीलिये जब गाँधी से आप कुछ पूछते हैं तो अधिकांशतः आपको भीतर से पता होता है कि गाँधो का जवाब क्या होगा। सवाल के भीतर जवाब होता है, क्योंकि जवाब कहीं बाहर से नहीं आना है, वह अपने भीतर ही खोजा जाना है। गांधी महज आईना हैं, जिसमें हम अपने काल की घटनाओं को देखते हैं और उनका सच पकड़ने की कोशिश करते हैं। दरअसल गांधी से सवाल पूछना अपने आप से पूछना

है, अपनी अंतरात्मा से पूछना है.. सवाल के भीतर जवाब होता है. क्योंकि जवाब कहीं बाहर से नहीं आना है, वह अपने भीतर ही खोजा जाना है।

विभिन्न विचारधाराओं, सम्प्रदायों और समुदायों में हाथों को मिलाने का काम समाज के नेतृत्व का है। लेकिन आज का नेतृत्व इस चुनौती से विमुख नजर आता है। दरअसल हाथों को मिलाने की बजाए मुट्ठियां और दिलो–दिमाग़ बंद करवाने में जुटा दिखाई देता है। यहां गांधी की स्मृति एक शिलालेख बन जाती है जो हमें बार–बार अपने स्वधर्म की याद दिलाती है। याद दिलातो है उस राष्ट्रपिता की जो कह सकता था कि सब देश मर जाएं और मानवता जीवित रहे तो मैं खुश रहूंगा। सच के उस पुजारी के आलोक में आज की राजनीति वह राजमार्ग है– जहां सत्य का प्रवेश निषेध है। जिसमें–भव्य मंचों पर बड़े–बड नेताओं के छोटे–छोटे वक्तव्य बिखर पड़े हैं। यह शिलालेख हमें लोकतंत्र की कड़वी हकीकत से दो–चार होने को मजबूर करता है जहां सत्य पर बहुमत का राज है, जहां सर गिने जाते हैं बुद्धि तौली नहीं जाती, जहां कलम पर सत्ता का आतंक है। तो फिर रास्ता कहां है? यहां फिर गांधी का बलिदान एक प्रकाशपुंज की तरह हमारा मार्गदर्शन करता है।

आज भारत का स्वधर्म खतरे में है। यह खतरा किसी बाहरी हमले की वजह से नहीं है। यह खतरा किसी हथियारबंद आंतरिक विद्रोहियों का हमला नहीं है। यह हमला आज लोकतांत्रिक सत्ता पर काबिज उन शक्तियों से है जिन्हें इस देश के संविधान और संस्कार दोनों से कोई वास्ता नहीं है। आज पूरा देश सत्ता के आगे नतमस्तक दिखाई पड़ता है। पार्टियां और नेता ही नहीं, विचार भी दब गया है। मार्क्सवाद से उदारवाद तक बीसवीं सदी की विचारधाराओं की ताकत चुक गयी दिखाई देती है। हमारी सभ्यता की धरोहर और राष्ट्रीय आंदोलन की विरासत को बचाने वाली शक्तियां बिखरी और सहमी हुई हैं।

ऐसे में गांधी जी का जीवन और उनका विचार वह दीप है जो हमारे स्वधर्म को आलोकित कर सकता है। लेकिन उस दिए का आलोक पाने के लिए हमें गांधी की पूजा–अर्चना छोड़नी होगी, मोहनदास करमचंद गांधी के जीवन की हर भूल से भी सीखना होगा, उनके प्रतीकों से चिपके रहने की आदत त्यागनी होगी। गांधी रूपी दिये के सामने हाथ जोड़ने की बजाय उसमे अपने मन, ज्ञान और कर्म रूपी तेल उंडेलना होगा। गांधी से यह पूछना कि दरअसल गांधीत्व है क्या, वह जो आपने हमें दिया, या वह जो हमने अपनी अपनी सुविधा के हिसाब से घड़ लिया है।

महात्मा गांधी हमारे देश के ऐसे अनूठे और संभवत अकेले व्यक्तित्व हैं जिन पर सबसे ज्यादा चर्चा होती है लेकिन सबसे कम समझ के साथ । एकांगी दृष्टि से उनको देखने समझने का चलन उतना ही पुराना है जितना कि खुद गांधी जी का दर्शन । कभी हम उनको राजनेता की तरह देखते हैं और देश की अनेक समस्याओं का ठीकरा उनके सर फोड़ने की कोशिश करते हैं। उनको भारत–पाक विभाजन सहित अनेक घटनाओं का जिम्मेदार ठहराने लगते हैं। उनको संत की दृष्टि से देखने वाले उनके राजनैतिक चिन्तन को उपेक्षित कर देते हैं। मनुष्य समझने की संतुलित दृष्टि का दावा करने वाले भी कभी महामानव बताकर उनके दर्शन को आमजन से दूर कर देते हैं तो कोई उनको सामान्य मानव बताकर उनके जीवन में खोट ढूंढने लगते हैं। यह सारा वृत्तांत इतना तो बता ही देता है कि गांधी की चर्चा के बिना हमारे देश और समाज पर बात करना अधूरी ही रहेगा। तो क्या यह जरूरी नहीं हो जाता कि हम गांधी जी को उनके गांधीत्व के साथ मूल रूप में जानने समझने की कोशिश करें। आज आवश्यकता है कि हम वियतनाम के राष्ट्रपिता हो ची मिन्ह के उस वक्तव्य को याद करें कि स्वाधीनता और न्याय के लिये संघर्ष कर रहा हर आन्दोलनकारी गॉधी जी से कुछ न कुछ सीखता है और हम सब एक तरह से गॉधी जी की ही प्रोजिनी

हैं।अतः गाधी के रास्ते पर चलकर ही परिवर्तन सम्भव है और इसी पर विनाश को टाला जा सकता है और विकास के पथ पर अग्रसर हुआ जा सकता है। शर्त केवल एक है कि हम अपने सवालों के प्रति ईमानदार रहें और उससे भी अधिक महत्वपूर्ण है कि हमारे भीतर बैठे गॉधी उन सवालों का जो उत्तर देते हैं उनके प्रति और भी ज्यादा ईमानदार रहें, उन्हें स्वीकारें और जगत में प्रेम तथा सौहार्द्र की महक को फैलायें।

संदर्भ ग्रन्थ

1 प्रताप सिंह–गॉधी का दर्शन
2 तेंदुलकर – महात्मा खण्ड
3 महात्मा गांधी– सत्य के साथ मेरे प्रयोग
4 डॉ पुरूषोत्तम नागर– आधुनिक भारतीय सामाजिक व राजनैतिक चिन्तन
5 लुई फिशर– गॉधी हिज लाइफ एंड मैसेज फार द वर्ल्ड
6 डॉ राधाकृष्णन–गॉधी श्रद्धाज्जलि ग्रन्थ